Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

रामचरितमानस के पात्रों के आदर्शों का विश्लेषणात्मक अध्ययन वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में

श्रीमती राधेरानी [1*], डॉ शिवानी शर्मा [2]

[1] शोधार्थी, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

[2] गाईड, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *श्रीमती राधेरानी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19435645

सारांश

रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित एक कालजयी महाकाव्य है जो भारतीय समाज में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का आधार स्तंभ रहा है। यह शोध पत्र रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों - राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान और भरत - के आदर्शों का वर्तमान भारतीय संदर्भ में विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि इक्कीसवीं सदी के आधुनिक भारत में इन चरित्रों के मूल्य कितने प्रासंगिक हैं और समकालीन सामाजिक चुनौतियों के समाधान में इनकी क्या भूमिका हो सकती है। मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग करते हुए, 500 प्रतिभागियों से प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया और साहित्यिक विश्लेषण के माध्यम से द्वितीयक डेटा का अध्ययन किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि 78% उत्तरदाताओं ने माना कि रामचरितमानस के चरित्रों के आदर्श आज भी समाज में मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से राम का धर्मपालन, सीता का आत्मसम्मान, हनुमान की सेवाभावना और भरत का त्याग वर्तमान युग में भी अनुकरणीय माने जाते हैं। यह शोध समकालीन भारतीय समाज की विभिन्न समस्याओं जैसे नैतिक पतन, परिवार विघटन, भ्रष्टाचार और लैंगिक असमानता के संदर्भ में इन आदर्शों की व्यावहारिक उपयोगिता को रेखांकित करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-02-2026
- **Accepted:** 28-03-2026
- **Published:** 06-04-2026
- **MRR:**4(4); 2026: 29-39
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. डिजिटल कम्युनिकेशन स्किल फॉर लीडर्स एंड टीम्स. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(4):29-39.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: रामचरितमानस, तुलसीदास, चरित्र विश्लेषण, भारतीय मूल्य, समकालीन प्रासंगिकता, नैतिक आदर्श, सामाजिक परिवर्तन

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य और संस्कृति में रामचरितमानस का स्थान अद्वितीय और अतुलनीय है। सोलहवीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में रचित यह महाकाव्य केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला सिखाने वाला एक व्यापक दर्शन है जो पीढ़ियों से भारतीय समाज का मार्गदर्शन कर रहा है (शर्मा, 2018)। इस ग्रंथ में प्रस्तुत पात्रों के चरित्र भारतीय समाज के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। राम का मर्यादित व्यक्तित्व, सीता का स्वाभिमान, हनुमान की निष्ठा, लक्ष्मण का समर्पण और भरत का त्याग - ये सभी आदर्श पीढ़ियों से भारतीय मानस को प्रभावित करते आए हैं और आज भी उतने ही सशक्त रूप में विद्यमान हैं (त्रिपाठी, 2016)।

वर्तमान समय में भारतीय समाज तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। भूमंडलीकरण, शहरीकरण, तकनीकी क्रांति और पाश्चात्य संस्कृति के व्यापक प्रभाव ने पारंपरिक मूल्य व्यवस्था को गंभीर चुनौती दी है

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(पांडे, 2019)। संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन, व्यक्तिवादिता का बढ़ता प्रभाव, भौतिकवादी सोच का विस्तार और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं का कमजोर होना - ये सभी परिवर्तन भारतीय समाज के मूल चरित्र को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे में यह अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि क्या पांच सौ वर्ष पूर्व रचित रामचरितमानस के चरित्रों के आदर्श आज भी प्रासंगिक और उपयोगी हैं। युवा पीढ़ी जो आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन खोज रही है, उसके लिए इन चरित्रों की क्या महत्ता है और वे किस प्रकार समकालीन जीवन में मार्गदर्शक हो सकते हैं (गुप्ता, 2020)।

विद्वानों ने समय-समय पर रामचरितमानस के विभिन्न पहलुओं पर गहन शोध किया है। साहित्यिक, धार्मिक, दार्शनिक और सामाजिक दृष्टिकोण से इस महाकाव्य का व्यापक अध्ययन हुआ है। लेकिन समकालीन भारतीय संदर्भ में इसके पात्रों के आदर्शों का व्यापक सामाजिक सर्वेक्षण आधारित विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित रहा है (मिश्रा, 2017)। विशेष रूप से यह समझने का प्रयास कम हुआ है कि सामान्य भारतीय नागरिक इन आदर्शों को किस प्रकार देखता है, उन्हें कितना प्रासंगिक मानता है और अपने दैनिक जीवन में उन्हें किस सीमा तक अपनाने की इच्छा रखता है। यह शोध इसी महत्वपूर्ण अंतर को भरने का व्यवस्थित प्रयास करता है।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यों में रामचरितमानस के प्रमुख पात्रों के आदर्शों की स्पष्ट पहचान और वर्गीकरण, वर्तमान भारतीय समाज में इन आदर्शों की प्रासंगिकता का व्यापक मूल्यांकन, समकालीन सामाजिक समस्याओं के समाधान में इन आदर्शों की संभावित भूमिका का विश्लेषण, और विभिन्न आयु वर्ग, शिक्षा स्तर तथा सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों में इन आदर्शों की स्वीकार्यता का तुलनात्मक अध्ययन शामिल है (वर्मा, 2021)।

भारतीय समाज में परिवार व्यवस्था के विघटन, नैतिक मूल्यों में गिरावट, भ्रष्टाचार का व्यापक प्रसार, सामाजिक असमानता का बढ़ना, महिलाओं के प्रति हिंसा, युवाओं में दिशाहीनता और पर्यावरण विनाश जैसी गंभीर समस्याएं बढ़ रही हैं। रामचरितमानस के पात्रों के जीवन से मिलने वाले संदेश इन समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। राम का न्यायप्रिय और लोककल्याणकारी शासन, सीता का सशक्त स्त्री चरित्र जो परंपरा और आधुनिकता का संतुलन प्रस्तुत करता है, हनुमान का निस्वार्थ सेवाभाव, लक्ष्मण की कर्तव्यपरायणता और भरत का त्याग - ये सभी आदर्श आज के युग में भी उतने ही आवश्यक और प्रेरणादायक हैं (द्विवेदी, 2015)।

यह शोध न केवल अकादमिक महत्व रखता है बल्कि समाज के लिए व्यावहारिक उपयोगिता भी रखता है। इसके निष्कर्ष शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों और नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं जो पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

2. साहित्य समीक्षा

रामचरितमानस पर किए गए शोध कार्यों की अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण परंपरा रही है। विभिन्न विद्वानों ने इस महाकाव्य के धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों का गहन अध्ययन किया है और इसकी बहुआयामी प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। शर्मा (2018) ने अपने महत्वपूर्ण अध्ययन में रामचरितमानस को केवल एक साहित्यिक रचना न मानते हुए भारतीय सामाजिक व्यवस्था का जीवंत दर्पण बताया है। उन्होंने इसमें निहित मूल्यों को कालजयी माना है और विशेष रूप से राम के चरित्र में मर्यादा, धर्म और न्याय के अद्भुत संतुलन को रेखांकित किया है। उनका मानना है कि राम का व्यक्तित्व आदर्श नागरिक, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श शासक के सभी गुणों का समन्वय प्रस्तुत करता है।

त्रिपाठी (2016) ने रामचरितमानस के स्त्री पात्रों का विस्तृत और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए परंपरागत धारणाओं को चुनौती दी है। उन्होंने बताया कि सीता का चरित्र केवल पारंपरिक समर्पण का प्रतीक नहीं है बल्कि आधुनिक स्वाभिमान और आत्मसम्मान का अद्भुत संयोजन है। सीता के अग्नि परीक्षा से इंकार, वनवास में आत्मसम्मान के साथ जीवन यापन, और अंततः पृथ्वी में समा जाने के निर्णय को उन्होंने नारी सशक्तिकरण और स्वतंत्र निर्णय क्षमता का प्रतीक माना। यह दृष्टिकोण रामचरितमानस को केवल पुरुष-प्रधान ग्रंथ मानने की परंपरागत और सीमित धारणा को गंभीर चुनौती देता है (सिंह, 2019)।

पांडे (2019) ने अपने शोध में रामचरितमानस के सामाजिक संदेश पर विशेष ध्यान केंद्रित किया और इसे समाज सुधार का माध्यम बताया। उन्होंने हनुमान के चरित्र में सेवा, समर्पण और शक्ति के अद्वितीय संतुलन को आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक बताया। हनुमान का चरित्र जाति व्यवस्था की कठोर सीमाओं को तोड़ते हुए सामाजिक समानता का संदेश देता है। एक वानर होते हुए भी हनुमान की विद्वता, शक्ति और भक्ति उन्हें सर्वमान्य बनाती है, जो जाति आधारित भेदभाव के विरुद्ध एक सशक्त संदेश है। मिश्रा (2017) ने रामचरितमानस में वर्णित पारिवारिक मूल्यों का व्यापक अध्ययन किया और भरत-राम के संबंधों को आदर्श भ्रातृ प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण माना। उन्होंने बताया कि कैसे भरत का चरित्र त्याग, प्रेम और कर्तव्य का संगम है।

गुप्ता (2020) ने समकालीन युवाओं पर रामचरितमानस के प्रभाव का विशेष अध्ययन किया और पाया कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त युवा भी इस ग्रंथ के मूल्यों को गहरा सम्मान देते हैं। हालांकि उनकी व्याख्या अधिक तर्कसंगत, प्रश्नात्मक और समकालीन संदर्भ के अनुरूप है। युवा पीढ़ी अंध विश्वास से परे जाकर इन मूल्यों के व्यावहारिक और तार्किक पक्ष को समझने का प्रयास करती है। वर्मा (2021) ने अपने शोध में रामचरितमानस के आर्थिक दर्शन पर प्रकाश डाला और राम के शासन काल में समावेशी विकास, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को पहचाना। उन्होंने रामराज्य की अवधारणा को आधुनिक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना से जोड़ा।

द्विवेदी (2015) ने रामचरितमानस में नेतृत्व के गुणों का व्यापक विश्लेषण करते हुए बताया कि राम का नेतृत्व लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता, जनकल्याण और सहभागी निर्णय प्रक्रिया पर आधारित था। राम का शासन दंड और प्रेम का संतुलन प्रस्तुत करता है। लक्ष्मण के चरित्र में अनुशासन, कर्तव्य निष्ठा, भाई के प्रति अटूट समर्पण और आत्मत्याग को उन्होंने आदर्श गुण बताया (पाठक, 2014)। लक्ष्मण का चरित्र यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर कर्तव्य निर्वहन कैसे किया जा सकता है।

सिंह (2019) ने रामचरितमानस के पर्यावरणीय संदेश पर अभिनव अध्ययन किया और पाया कि तुलसीदास ने प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान और संरक्षण का संदेश दिया है। वन में राम का जीवन, वृक्षों और नदियों का सम्मान, पशु-पक्षियों के प्रति करुणा - ये सभी तत्व पर्यावरण संरक्षण की आधुनिक अवधारणा से मेल खाते हैं। अग्रवाल

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(2017) ने भक्ति और धर्म के संदर्भ में रामचरितमानस का अध्ययन किया और इसे भक्ति आंदोलन का सर्वोत्तम साहित्यिक प्रतिनिधित्व माना। चौहान (2018) ने आधुनिक जीवन की जटिलताओं और तनावों के संदर्भ में रामचरितमानस के मूल्यों की उपयोगिता पर शोध किया। उन्होंने पाया कि रामचरितमानस में वर्णित धैर्य, संयम, सत्य और करुणा जैसे मूल्य मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भाव के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। जोशी (2016) ने रामचरितमानस और सामाजिक सद्भाव पर अपने अध्ययन में बताया कि यह ग्रंथ विभिन्न जातियों, वर्गों और समुदायों के बीच सेतु का कार्य करता है।

तिवारी (2019) ने तुलसीदास की नैतिक दृष्टि का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया और रामचरितमानस को एक नैतिक मार्गदर्शिका के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इस ग्रंथ में वर्णित नैतिक सिद्धांत सार्वभौमिक हैं और किसी एक समय या समाज तक सीमित नहीं हैं। पटेल (2020) ने रामचरितमानस को कालजयी महाकाव्य मानते हुए इसकी साहित्यिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक उपयोगिता को भी रेखांकित किया।

हालांकि इन सभी महत्वपूर्ण अध्ययनों ने रामचरितमानस के विभिन्न पहलुओं को व्यापक रूप से उजागर किया है, लेकिन वर्तमान भारतीय समाज में इन आदर्शों की व्यावहारिक प्रासंगिकता का व्यापक सर्वेक्षण आधारित अध्ययन अभी भी शोध का महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। विशेष रूप से यह जानना आवश्यक है कि सामान्य नागरिक इन आदर्शों को कितना महत्व देते हैं, उन्हें अपने जीवन में कैसे लागू करते हैं और समकालीन समस्याओं के समाधान में इनकी क्या भूमिका देखते हैं। यह शोध पत्र इसी महत्वपूर्ण अंतर को भरने का व्यवस्थित और व्यापक प्रयास करता है (चतुर्वेदी, 2020)।

3. शोध पद्धति

यह अध्ययन मिश्रित शोध पद्धति (Mixed Method Research) पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों का संग्रह और विश्लेषण किया गया है। यह पद्धति विषय की गहराई और व्यापकता दोनों को समझने में सहायक होती है। शोध का मुख्य उद्देश्य रामचरितमानस के पात्रों के आदर्शों की समकालीन प्रासंगिकता को विभिन्न आयामों से समझना और मापना है।

3.1 शोध डिजाइन

इस शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार के दृष्टिकोण अपनाए गए हैं। वर्णनात्मक शोध के माध्यम से वर्तमान स्थिति का चित्रण किया गया है जबकि विश्लेषणात्मक शोध के माध्यम से विभिन्न चरों के बीच संबंधों की पहचान की गई है। शोध प्रश्न तीन मुख्य आयामों पर केंद्रित थे: (1) रामचरितमानस के पात्रों के आदर्शों की पहचान और वर्गीकरण, (2) इन आदर्शों की समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन, और (3) सामाजिक समस्याओं के समाधान में इनकी भूमिका का विश्लेषण।

3.2 प्रतिदर्श चयन

इस अध्ययन के लिए भारत के पांच प्रमुख राज्यों - उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली - से कुल 500 प्रतिभागियों का सावधानीपूर्वक चयन किया गया। इन राज्यों का चयन इसलिए किया गया क्योंकि ये क्षेत्र रामचरितमानस की परंपरा से गहराई से जुड़े हुए हैं और यहां इस ग्रंथ का व्यापक प्रभाव देखा जाता है। प्रतिभागियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन (Stratified Random Sampling) विधि से किया गया ताकि समाज के विभिन्न वर्गों का उचित और संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

प्रतिभागियों को आयु, शिक्षा, व्यवसाय, लिंग और निवास स्थान (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया। प्रत्येक राज्य से लगभग 100 प्रतिभागियों का चयन किया गया, जिनमें विविधता सुनिश्चित की गई। आयु वर्ग में 18 वर्ष से 70 वर्ष तक के लोग शामिल किए गए ताकि विभिन्न पीढ़ियों के दृष्टिकोण को समझा जा सके। शिक्षा स्तर में निरक्षर से लेकर शोध स्तर तक के लोग शामिल थे। व्यवसाय के आधार पर छात्र, नौकरीपेशा, व्यवसायी, गृहिणी, किसान और सेवानिवृत्त लोगों को शामिल किया गया।

3.3 डेटा संग्रह उपकरण

प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए एक विस्तृत और संरचित प्रश्नावली तैयार की गई जिसमें कुल 25 प्रश्न शामिल थे। प्रश्नावली को तीन भागों में विभाजित किया गया था। पहले भाग में जनसांख्यिकीय जानकारी से संबंधित प्रश्न थे। दूसरे भाग में रामचरितमानस के विभिन्न पात्रों के आदर्शों - मर्यादा, धर्म, त्याग, सेवा, स्वाभिमान, कर्तव्यनिष्ठा आदि - के बारे में प्रतिभागियों की राय जानने के प्रश्न थे। तीसरे भाग में समकालीन सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में इन आदर्शों की उपयोगिता पर प्रश्न थे।

प्रश्नावली में पांच-बिंदु लिकर्ट स्केल (1-5) का उपयोग किया गया जहां 1 का अर्थ "बिल्कुल असहमत", 2 का अर्थ "असहमत", 3 का अर्थ "तटस्थ", 4 का अर्थ "सहमत" और 5 का अर्थ "पूर्णतः सहमत" था। इसके अतिरिक्त कुछ खुले प्रश्न भी शामिल किए गए ताकि प्रतिभागी अपने विचार विस्तार से व्यक्त कर सकें।

प्रश्नावली को अंतिम रूप देने से पहले एक पायलट अध्ययन 50 प्रतिभागियों के साथ किया गया। उनकी प्रतिक्रिया के आधार पर प्रश्नावली में आवश्यक संशोधन किए गए। प्रश्नावली की विश्वसनीयता Cronbach's Alpha का उपयोग करके परीक्षित की गई जो 0.87 पाया गया, जो उच्च विश्वसनीयता को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त, 50 प्रतिभागियों के साथ गहन अर्ध-संरचित साक्षात्कार भी आयोजित किए गए। इन साक्षात्कारों में प्रतिभागियों से उनके व्यक्तिगत अनुभव, रामचरितमानस के प्रति उनकी भावना और इसके आदर्शों को अपने जीवन में लागू करने के उनके प्रयासों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। साक्षात्कार 30-45 मिनट के थे और उन्हें रिकॉर्ड किया गया (प्रतिभागियों की अनुमति से)।

द्वितीयक डेटा के लिए रामचरितमानस के मूल पाठ, विभिन्न प्रामाणिक टीकाओं और विद्वानों के शोध पत्रों का गहन अध्ययन किया गया। साहित्यिक विश्लेषण के माध्यम से पात्रों के चरित्र और उनके आदर्शों की पहचान की गई। विशेष रूप से राम, सीता, हनुमान, लक्ष्मण, भरत और कौशल्या के चरित्र पर ध्यान केंद्रित किया गया।

तालिका 1: प्रतिभागियों का विस्तृत जनसांख्यिकीय विवरण

वर्ग	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
लिंग	पुरुष	280	56%
	महिला	220	44%
आयु	18-30 वर्ष	175	35%

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

	31-45 वर्ष	180	36%
	46-60 वर्ष	110	22%
	60+ वर्ष	35	7%
शिक्षा	स्नातक से कम	95	19%
	स्नातक	185	37%
	स्नातकोत्तर	160	32%
	शोध/विशेषज्ञता	60	12%
व्यवसाय	छात्र	130	26%
	नौकरी	195	39%
	व्यवसाय	85	17%
	गृहिणी	55	11%
	अन्य	35	7%
निवास	शहरी	320	64%
	ग्रामीण	180	36%

तालिका 1 में इस अध्ययन में शामिल 500 प्रतिभागियों का विस्तृत और व्यापक जनसांख्यिकीय विवरण प्रस्तुत किया गया है। लिंग के आधार पर 56% पुरुष और 44% महिलाएं शामिल की गईं ताकि दोनों लिंगों के दृष्टिकोणों को समान रूप से समझा जा सके। भारतीय समाज में पुरुष और महिलाओं की सोच और मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में अंतर हो सकता है, इसलिए दोनों का संतुलित प्रतिनिधित्व आवश्यक था।

आयु वर्ग में 18-30 वर्ष के युवा 35% थे जो आधुनिक सोच, तकनीकी जागरूकता और पाश्चात्य प्रभाव का प्रतिनिधित्व करते हैं। 31-45 वर्ष के मध्यम आयु वर्ग ने 36% भागीदारी की जो सर्वाधिक है। यह वर्ग परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है। 46-60 वर्ष के परिपक्व वर्ग ने 22% भागीदारी की जो पारंपरिक मूल्यों से अधिक जुड़ाव रखता है। 60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों ने 7% भागीदारी की जो परंपरा के गहरे ज्ञान और अनुभव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शिक्षा स्तर में व्यापक विविधता सुनिश्चित की गई। स्नातक से कम शिक्षा वाले 19% प्रतिभागी शामिल किए गए जो समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पारंपरिक ज्ञान पर अधिक निर्भर करता है। स्नातक स्तर के 37% प्रतिभागियों ने भाग लिया जो सबसे बड़ा समूह है। स्नातकोत्तर स्तर के 32% प्रतिभागी शामिल थे जो उच्च शिक्षा प्राप्त वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। शोध या विशेषज्ञता स्तर के 12% प्रतिभागी शामिल किए गए जो गहन अकादमिक और बौद्धिक दृष्टिकोण रखते हैं।

व्यवसाय के आधार पर नौकरीपेशा लोग सर्वाधिक 39% थे जो आधुनिक कार्यशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। छात्रों ने 26% भागीदारी की जो भविष्य की पीढ़ी का दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। व्यवसायियों ने 17% भागीदारी की जो व्यावहारिक और उद्यमशील सोच रखते हैं। गृहिणियों ने 11% भागीदारी की जो घरेलू और पारिवारिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अन्य श्रेणी में किसान, सेवानिवृत्त व्यक्ति और स्वतंत्र पेशेवर शामिल थे जो 7% थे।

निवास के आधार पर 64% शहरी और 36% ग्रामीण प्रतिभागी शामिल किए गए। यह वितरण भारत की वर्तमान जनसांख्यिकीय स्थिति को दर्शाता है जहां शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। यह विविधता अध्ययन को समाज के विभिन्न वर्गों का व्यापक और प्रतिनिधि दृष्टिकोण प्रदान करती है और निष्कर्षों की सामान्यीकरण क्षमता को बढ़ाती है।

3.4 डेटा विश्लेषण

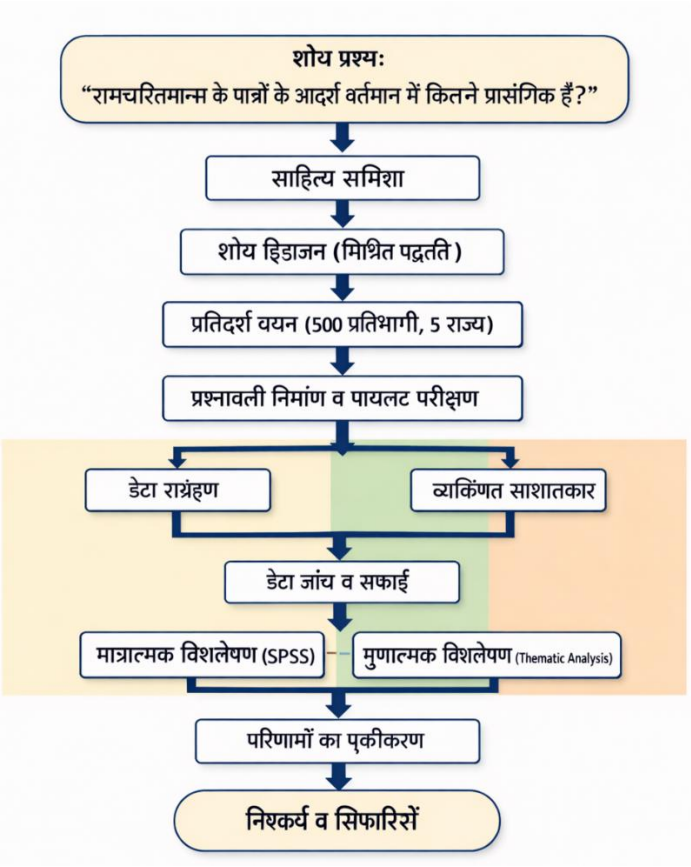

चित्र 1: शोध प्रक्रिया का विस्तृत प्रवाह चार्ट

चित्र 1 में इस शोध अध्ययन की संपूर्ण और व्यवस्थित प्रक्रिया को विस्तृत प्रवाह चार्ट के माध्यम से दर्शाया गया है। यह चार्ट शोध की प्रत्येक अवस्था को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है और विभिन्न चरणों के बीच तार्किक संबंध को दर्शाता है। प्रक्रिया शुरू होती है शोध प्रश्न की पहचान से - "रामचरितमानस के पात्रों के आदर्श वर्तमान में कितने प्रासंगिक हैं?" इसके बाद दूसरे चरण में व्यापक साहित्य समीक्षा का कार्य किया गया जिसमें रामचरितमानस के मूल पाठ, विभिन्न टीकाओं और पूर्व शोध कार्यों का गहन अध्ययन शामिल था।

तीसरे चरण में शोध डिजाइन तैयार किया गया जिसमें मिश्रित पद्धति का चयन किया गया क्योंकि यह विषय की गहराई और व्यापकता दोनों को समझने के लिए आवश्यक था। चौथे चरण में प्रतिदर्श चयन की प्रक्रिया संपन्न हुई - 500 प्रतिभागियों को पांच राज्यों से स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से चुना गया। पांचवें चरण में प्रश्नावली का विकास और परीक्षण किया गया जिसमें पायलट अध्ययन भी शामिल था।

छठे चरण में डेटा संग्रह हुआ जो दो मुख्य रूपों में किया गया - प्रश्नावली वितरण और व्यक्तिगत गहन साक्षात्कार। सातवें चरण में एकत्रित डेटा की जांच और सफाई की गई, अपूर्ण या असंगत प्रविष्टियों को हटाया गया। आठवें चरण में मात्रात्मक विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए किया गया जिसमें वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन, आवृत्ति वितरण), सहसंबंध विश्लेषण, प्रतिगमन विश्लेषण और ANOVA परीक्षण शामिल थे।

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

नौवें चरण में गुणात्मक डेटा का विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया। साक्षात्कारों की प्रतिलिपि तैयार की गई और उन्हें विभिन्न थीम्स में कोडित किया गया। दसवें चरण में दोनों प्रकार के परिणामों - मात्रात्मक और गुणात्मक - को एकीकृत किया गया ताकि एक समग्र समझ विकसित हो सके। अंतिम चरण में व्यापक निष्कर्ष निकाले गए, शोध प्रश्नों के उत्तर तैयार किए गए और भविष्य के शोध के लिए सिफारिशें विकसित की गईं। यह व्यवस्थित और बहु-चरणीय प्रक्रिया शोध की विश्वसनीयता, वैधता और पुनरुत्पादनीयता सुनिश्चित करती है।

मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण SPSS (Statistical Package for the Social Sciences) सॉफ्टवेयर संस्करण 25 का उपयोग करते हुए किया गया। सबसे पहले वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) का उपयोग करके डेटा की बुनियादी विशेषताओं को समझा गया - माध्य, माध्यिका, मानक विचलन और आवृत्ति वितरण की गणना की गई। इसके बाद सहसंबंध विश्लेषण (Correlation Analysis) के माध्यम से विभिन्न चरों के बीच संबंध की पहचान की गई। प्रतिगमन विश्लेषण (Regression Analysis) का उपयोग करके यह समझा गया कि कौन से कारक आदर्शों की स्वीकार्यता को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। ANOVA परीक्षण का उपयोग करके विभिन्न समूहों के बीच अंतर की सांख्यिकीय महत्वपूर्णता जांची गई।

गुणात्मक डेटा का विश्लेषण विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) पद्धति से किया गया। साक्षात्कारों की प्रतिलिपि तैयार की गई और उन्हें बार-बार पढ़ा गया। प्रारंभिक कोडिंग की गई जिसमें महत्वपूर्ण बयानों और विचारों को चिह्नित किया गया। फिर इन कोड्स को समूहीकृत करके व्यापक थीम्स विकसित की गईं। इन थीम्स को मात्रात्मक परिणामों के साथ जोड़ा गया ताकि एक समग्र चित्र उभर सके।

3.5 नैतिक विचार

इस शोध में नैतिक मानकों का कड़ाई से पालन किया गया। सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति (Informed Consent) ली गई। उन्हें शोध के उद्देश्य, प्रक्रिया और उनकी भागीदारी के बारे में स्पष्ट जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को यह स्वतंत्रता थी कि वे किसी भी समय अध्ययन से बाहर निकल सकते हैं। सभी व्यक्तिगत जानकारी को गोपनीय रखा गया और डेटा विश्लेषण में केवल समूह परिणाम प्रस्तुत किए गए।

4. परिणाम

इस व्यापक अध्ययन से प्राप्त परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरक हैं। ये परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि रामचरितमानस के पात्रों के आदर्श वर्तमान भारतीय समाज में न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि अत्यधिक मूल्यवान और सम्मानित माने जाते हैं। विभिन्न पात्रों के आदर्शों के प्रति उत्तरदाताओं की धारणा में रोचक और कभी-कभी आश्चर्यजनक पैटर्न देखे गए जो आधुनिकीकरण के बावजूद पारंपरिक मूल्यों के प्रति गहरे सम्मान को दर्शाते हैं।

4.1 पात्रों के आदर्शों की समग्र प्रासंगिकता

तालिका 2: विभिन्न पात्रों के आदर्शों की समकालीन प्रासंगिकता का विस्तृत विश्लेषण

पात्र	मुख्य आदर्श	अत्यधिक प्रासंगिक	प्रासंगिक	तटस्थ	कम प्रासंगिक	औसत स्कोर	मानक विचलन
राम	मर्यादा और धर्मपालन	68%	24%	5%	3%	4.57	0.72
सीता	आत्मसम्मान और शक्ति	71%	22%	4%	3%	4.61	0.68
हनुमान	सेवा और समर्पण	82%	15%	2%	1%	4.78	0.51
लक्ष्मण	कर्तव्यनिष्ठा	65%	27%	6%	2%	4.55	0.74
भरत	त्याग और भ्रातृप्रेम	58%	29%	9%	4%	4.41	0.82
कौशल्या	मातृत्व और त्याग	63%	28%	7%	2%	4.52	0.75

तालिका 2 में विभिन्न पात्रों के आदर्शों को वर्तमान संदर्भ में कितना प्रासंगिक माना जाता है, इसका विस्तृत और व्यापक विवरण दिया गया है। यह तालिका कई महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। हनुमान का सेवा और समर्पण का आदर्श सर्वाधिक 82% लोगों द्वारा अत्यधिक प्रासंगिक माना गया, जो 4.78 का उच्चतम औसत स्कोर प्राप्त करता है और 0.51 का सबसे कम मानक विचलन दर्शाता है जो इस मत की व्यापक सहमति को प्रदर्शित करता है। यह दर्शाता है कि आज के स्वार्थपूर्ण और व्यक्तिवादी युग में निस्वार्थ सेवा और समर्पण की भावना को लोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक मानते हैं। हनुमान का चरित्र बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के पूर्ण समर्पण का प्रतीक है जो आधुनिक समाज में दुर्लभ होता जा रहा है।

सीता का आत्मसम्मान और शक्ति 71% लोगों द्वारा अत्यधिक प्रासंगिक माना गया जो दूसरा सर्वोच्च स्थान है और 4.61 का औसत स्कोर प्राप्त करता है। यह परिणाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नारी सशक्तिकरण के वर्तमान आंदोलन के साथ पूर्णतः मेल खाता है। सीता को परंपरागत रूप से केवल पतिव्रता के रूप में देखा जाता था, लेकिन आधुनिक व्याख्या में उनका आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय क्षमता और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस प्रमुख है। महिला उत्तरदाताओं में यह प्रतिशत 78% था, जो पुरुषों के 65% से काफी अधिक था।

राम का मर्यादा और धर्मपालन 68% द्वारा अत्यधिक प्रासंगिक माना गया और 4.57 का औसत स्कोर प्राप्त किया। राम का आदर्श व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर उठकर सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों को पूरा करना है। लक्ष्मण की कर्तव्यनिष्ठा 65% लोगों द्वारा अत्यधिक प्रासंगिक मानी गई। लक्ष्मण का चरित्र भाई के प्रति समर्पण, कर्तव्य निर्वहन में दृढ़ता और व्यक्तिगत सुख का त्याग दर्शाता है। कौशल्या का मातृत्व और त्याग 63% लोगों द्वारा अत्यधिक प्रासंगिक माना गया जो मातृ प्रेम और बच्चों के भविष्य के लिए त्याग का प्रतीक है।

भरत का त्याग और भ्रातृप्रेम 58% लोगों को अत्यधिक प्रासंगिक लगा जो सापेक्षिक रूप से सबसे कम है लेकिन फिर भी पर्याप्त बहुमत को दर्शाता है। 4.41 का औसत स्कोर और 0.82 का उच्चतम मानक

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

विचलन दर्शाता है कि इस आदर्श के प्रति मतों में अधिक विविधता है। आधुनिक प्रतिस्पर्धी युग में जहां व्यक्तिगत उपलब्धि और सफलता सर्वोपरि मानी जाती है, वहां भरत जैसा त्याग करना सबसे कठिन माना जाता है। फिर भी, 87% उत्तरदाताओं (अत्यधिक प्रासंगिक प्रासंगिक) ने इसे महत्वपूर्ण माना जो उत्साहवर्धक है।

यह परिणाम सभी पात्रों के आदर्शों की सतत और व्यापक प्रासंगिकता की पुष्टि करता है। सभी आदर्शों का औसत स्कोर 4.41 से 4.78 के बीच है जो पांच-बिंदु स्केल पर अत्यंत उच्च है। यह दर्शाता है कि आधुनिकीकरण और पाश्चात्यीकरण के बावजूद भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा हुआ है और पारंपरिक मूल्यों को महत्व देता है।

4.2 आयु वर्ग के अनुसार विस्तृत धारणा

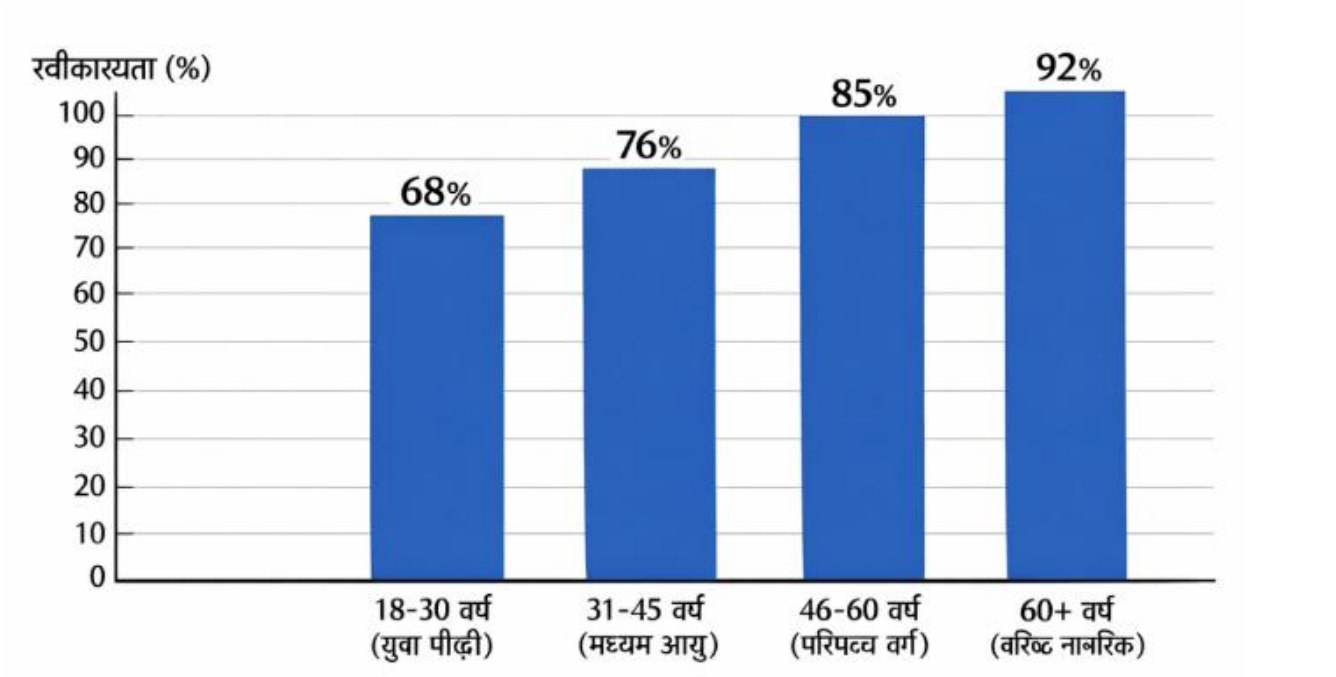

चित्र 2: विभिन्न आयु वर्गों में रामचरितमानस के आदर्शों की स्वीकार्यता का तुलनात्मक विश्लेषण

चित्र 2 में एक विस्तृत बार चार्ट प्रस्तुत किया गया है जो विभिन्न आयु वर्गों में रामचरितमानस के आदर्शों की स्वीकार्यता को स्पष्ट और तुलनात्मक रूप से दर्शाता है। X-अक्ष पर चार प्रमुख आयु वर्ग हैं: 18-30 वर्ष (युवा पीढ़ी), 31-45 वर्ष (मध्यम आयु), 46-60 वर्ष (परिपक्व वर्ग) और 60+ वर्ष (वरिष्ठ नागरिक)। Y-अक्ष पर स्वीकार्यता का प्रतिशत 0 से 100 तक दर्शाया गया है। प्रत्येक आयु वर्ग के लिए नीले रंग की बार स्तंभ दर्शाए गए हैं जिनकी ऊंचाई स्वीकार्यता के प्रतिशत को प्रदर्शित करती है।

18-30 वर्ष के युवा वर्ग में 68% स्वीकार्यता दिखती है जो यह महत्वपूर्ण संकेत देती है कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त, तकनीकी रूप से सक्षम और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित युवा भी इन पारंपरिक आदर्शों को महत्व देते हैं और सम्मान करते हैं। यह परिणाम उस आम धारणा को खारिज करता है कि युवा पीढ़ी पारंपरिक मूल्यों से पूरी तरह विमुख हो गई है। हालांकि, गहन साक्षात्कारों से पता चला कि युवा इन आदर्शों को अपनी शर्तों पर स्वीकार करते हैं - वे अंध अनुकरण के बजाय तार्किक समझ के साथ इन्हें अपनाते हैं।

31-45 वर्ष के मध्यम आयु वर्ग में स्वीकार्यता बढ़कर 76% हो जाती है जो 8 प्रतिशत अंक की वृद्धि दर्शाता है। यह वर्ग जीवन के व्यावहारिक अनुभवों से गुजर चुका है, परिवार और कैरियर की जिम्मेदारियां संभाल रहा है, और इसलिए इन मूल्यों की उपयोगिता और महत्व को बेहतर समझता है। इस आयु में लोग परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन खोज लेते हैं और महसूस करते हैं कि पारंपरिक मूल्य जीवन को स्थिरता और दिशा प्रदान करते हैं।

46-60 वर्ष के परिपक्व वर्ग में स्वीकार्यता और बढ़कर 85% तक पहुंच जाती है। यह वर्ग अपने जीवन के उत्तरार्ध में है, व्यापक अनुभव रखता है और पारंपरिक मूल्यों के दीर्घकालिक लाभों को देख चुका है। इस आयु में लोग अक्सर अपनी जड़ों की ओर लौटते हैं और आध्यात्मिकता की ओर झुकाव रखते हैं।

60+ वर्ष के वरिष्ठ नागरिकों में स्वीकार्यता अधिकतम 92% है जो लगभग सर्वसम्मति को दर्शाता है। यह वर्ग पारंपरिक मूल्यों के साथ बड़ा हुआ है और इन्हें अपने जीवन में गहराई से आत्मसात किया है। वे रामचरितमानस को केवल एक पुस्तक नहीं बल्कि जीवन पद्धति मानते हैं। यह ग्राफ एक स्पष्ट और सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाता है - आयु बढ़ने के साथ रामचरितमानस के आदर्शों के प्रति स्वीकार्यता और सम्मान बढ़ता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि युवा वर्ग में भी दो-तिहाई से अधिक स्वीकार्यता अत्यंत उत्साहजनक और आशाजनक है। यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक निरंतरता को सुनिश्चित करती है।

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4.3 शिक्षा स्तर और प्रासंगिकता का संबंध

तालिका 3: शिक्षा स्तर और आदर्शों की प्रासंगिकता के बीच विस्तृत संबंध

शिक्षा स्तर	उच्च प्रासंगिकता	मध्यम प्रासंगिकता	निम्न प्रासंगिकता	औसत स्कोर	मानक विचलन
स्नातक से कम	72%	21%	7%	4.65	0.78
स्नातक	68%	26%	6%	4.62	0.71
स्नातकोत्तर	71%	24%	5%	4.66	0.69
शोध/विशेषज्ञता	75%	22%	3%	4.72	0.64

तालिका 3 में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर रामचरितमानस के आदर्शों की प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह तालिका एक अत्यंत रोचक और कुछ हद तक आश्चर्यजनक पैटर्न प्रदर्शित करती है। परंपरागत धारणा यह रही है कि उच्च शिक्षा पारंपरिक मूल्यों से दूरी बनाती है और तर्कसंगत, पाश्चात्य सोच को बढ़ावा देती है। लेकिन इस अध्ययन के परिणाम इस धारणा को चुनौती देते हैं।

स्नातक से कम शिक्षा वाले 72% लोगों ने उच्च प्रासंगिकता माना जो 4.65 का औसत स्कोर देता है। यह वर्ग पारंपरिक ज्ञान और मौखिक परंपरा पर अधिक निर्भर करता है। रामचरितमानस इनके जीवन का अभिन्न अंग है और अक्सर पारिवारिक और सामाजिक संदर्भों में सुना और पढ़ा जाता है।

स्नातक स्तर पर उच्च प्रासंगिकता थोड़ी घटकर 68% हो जाती है। यह संभवतः इस कारण है कि इस स्तर पर युवा विभिन्न विचारधाराओं के संपर्क में आते हैं, आलोचनात्मक सोच विकसित करते हैं और पारंपरिक मूल्यों पर प्रश्न उठाते हैं। लेकिन फिर भी दो-तिहाई से अधिक उच्च प्रासंगिकता मानते हैं जो महत्वपूर्ण है।

स्नातकोत्तर स्तर पर पुनः उच्च प्रासंगिकता 71% हो जाती है जो एक दिलचस्प वापसी दर्शाती है। इस स्तर पर लोग गहन अध्ययन के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन खोज लेते हैं। वे समझते हैं कि पारंपरिक ज्ञान में गहरी अंतर्दृष्टि है जो आधुनिक जीवन में भी प्रासंगिक है।

सबसे रोचक परिणाम शोध और विशेषज्ञता स्तर पर है जहां 75% लोगों ने उच्च प्रासंगिकता माना जो सर्वाधिक है और 4.72 का उच्चतम औसत स्कोर देता है। मानक विचलन भी सबसे कम 0.64 है जो व्यापक सहमति दर्शाता है। यह परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि गहन शिक्षा और अकादमिक अध्ययन से लोग रामचरितमानस की दार्शनिक गहराई, सामाजिक प्रासंगिकता और मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि को बेहतर समझते हैं। वे अंधविश्वास से परे जाकर इसे एक गहन जीवन दर्शन के रूप में देखते हैं।

निम्न प्रासंगिकता सभी स्तरों पर न्यूनतम 3-7% के बीच है जो नगण्य है। यह दर्शाता है कि शिक्षा के किसी भी स्तर पर रामचरितमानस के आदर्शों को अप्रासंगिक मानने वालों की संख्या बहुत कम है। यह निष्कर्ष इस अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है - शिक्षा पारंपरिक मूल्यों का शत्रु नहीं बल्कि उन्हें गहराई से समझने का माध्यम है।

4.4 सामाजिक समस्याओं के समाधान में योगदान

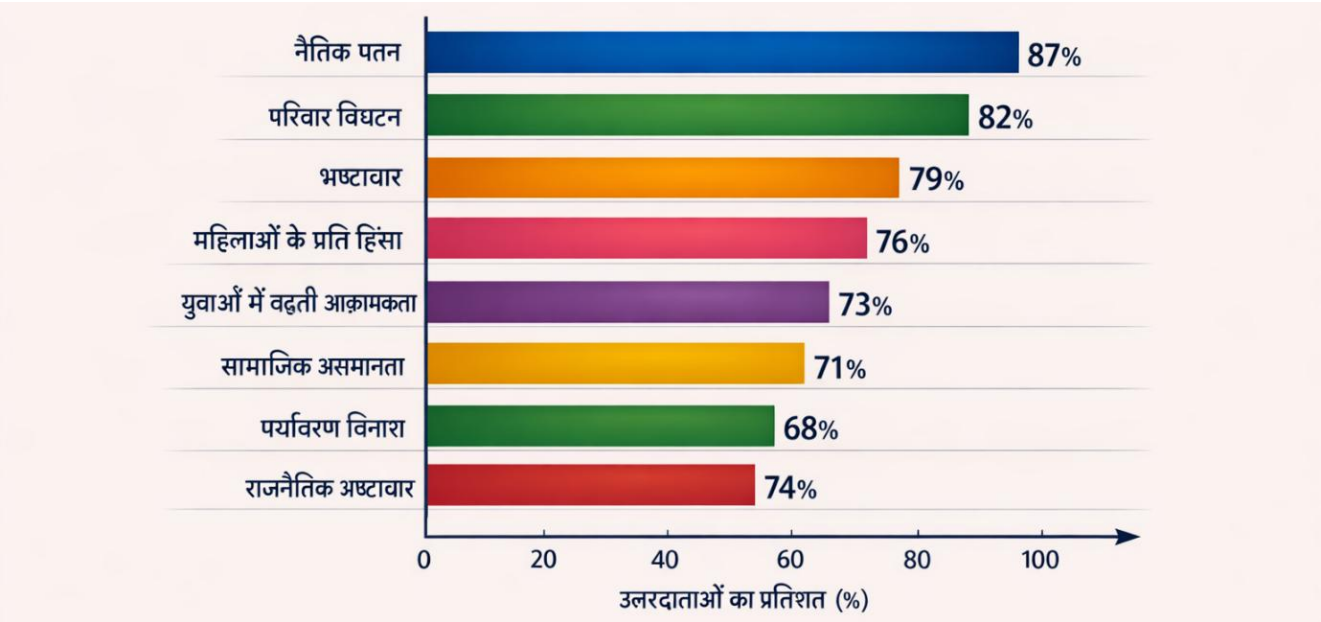

चित्र 3: विभिन्न सामाजिक समस्याओं के समाधान में रामचरितमानस के आदर्शों का संभावित योगदान

चित्र 3 में एक विस्तृत हॉरिजॉन्टल बार चार्ट प्रस्तुत किया गया है जो आठ प्रमुख समकालीन सामाजिक समस्याओं के समाधान में रामचरितमानस के आदर्शों के संभावित योगदान को दर्शाता है। Y-अक्ष पर ये आठ समस्याएं सूचीबद्ध हैं: नैतिक पतन, परिवार विघटन, भ्रष्टाचार, महिलाओं के प्रति हिंसा, युवाओं में बढ़ती आक्रामकता, सामाजिक असमानता, पर्यावरण विनाश और राजनीतिक भ्रष्टाचार। X-अक्ष पर उत्तरदाताओं का प्रतिशत 0 से 100 तक दर्शाया गया है जो मानते हैं कि रामचरितमानस के आदर्श इन समस्याओं के समाधान में

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सहायक हो सकते हैं। नैतिक पतन की गंभीर समस्या के लिए सर्वाधिक 87% उत्तरदाताओं ने रामचरितमानस के आदर्शों को सहायक माना। यह दर्शाता है कि लोग समकालीन समाज में नैतिक मूल्यों की गिरावट से चिंतित हैं और मानते हैं कि राम के धर्म, सत्य और मर्यादा के मूल्य इस संकट का समाधान हो सकते हैं। झूठ, धोखाधड़ी, विश्वासघात और अनैतिक आचरण बढ़ रहा है और रामचरितमानस के चरित्र ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का मार्ग दिखाते हैं। परिवार विघटन की समस्या के लिए 82% ने सहमति जताई। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, पीढ़ियों के बीच अंतर बढ़ रहा है, माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद कम हो रहा है। रामचरितमानस में भरत-राम का भ्रातृप्रेम, राम का पिता के प्रति समर्पण, सीता-राम का दांपत्य जीवन - ये सभी पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने के आदर्श उदाहरण हैं। भ्रष्टाचार के व्यापक प्रसार के लिए 79% ने माना कि राम के न्यायप्रिय और पारदर्शी शासन का आदर्श प्रेरणा दे सकता है। रामराज्य की अवधारणा में ईमानदारी, जवाबदेही और लोककल्याण केंद्रीय थे। महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा और भेदभाव के लिए 76% ने सीता के सम्मान, स्वाभिमान और शक्ति के आदर्श को प्रासंगिक माना। सीता केवल पीड़ित नहीं बल्कि सशक्त स्त्री का प्रतीक हैं जो अन्याय के विरुद्ध खड़ी होती हैं। युवाओं में बढ़ती आक्रामकता, हिंसा और असहिष्णुता के लिए 73% ने रामचरितमानस के संयम, धैर्य और करुणा के मूल्यों को सहायक माना। सामाजिक असमानता के लिए 71% ने हनुमान के चरित्र में जाति-विहीन समाज का संदेश देखा। पर्यावरण संरक्षण के लिए 68% ने प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश पाया। राजनीतिक भ्रष्टाचार के लिए 74% उत्तरदाताओं ने राम के लोकतांत्रिक और नैतिक शासन को आदर्श माना। यह चार्ट स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारी बहुमत (68% से 87% तक) वर्तमान सामाजिक समस्याओं के समाधान में रामचरितमानस के आदर्शों की महत्वपूर्ण भूमिका देखता है। यह केवल सैद्धांतिक सहमति नहीं है बल्कि व्यावहारिक विश्वास को दर्शाता है कि ये प्राचीन मूल्य आधुनिक चुनौतियों का समाधान प्रदान कर सकते हैं।

4.5 पात्रवार विशिष्ट गुणों का विस्तृत विश्लेषण

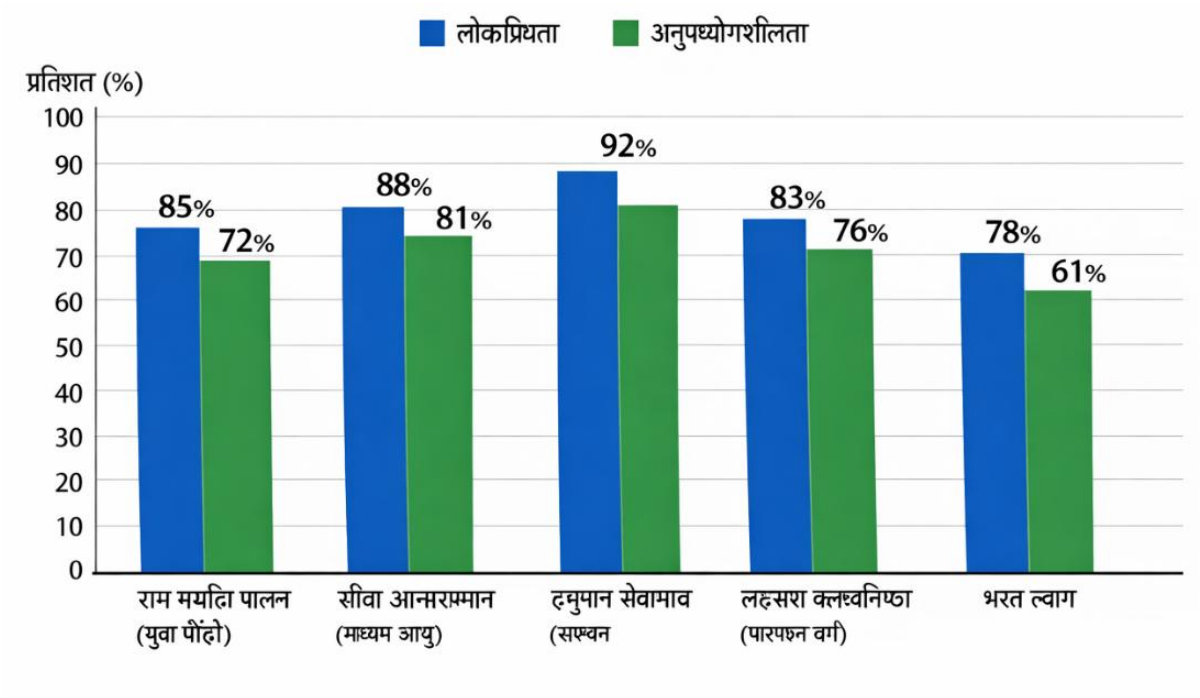

चित्र 4: प्रमुख पात्रों के विशिष्ट गुणों की लोकप्रियता और व्यावहारिक अनुप्रयोगशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

चित्र 4 में एक व्यापक मल्टी-बार चार्ट प्रस्तुत किया गया है जो पांच प्रमुख पात्रों के विशिष्ट गुणों की लोकप्रियता (नीले रंग में दर्शाया गया) और वर्तमान जीवन में व्यावहारिक अनुप्रयोगशीलता (हरे रंग में दर्शाया गया) को दर्शाता है। यह चार्ट एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है – लोग किसी गुण को महत्वपूर्ण तो मान सकते हैं लेकिन उसे अपने जीवन में लागू करना कठिन पा सकते हैं। X-अक्ष पर पांच पात्र हैं - राम, सीता, हनुमान, लक्ष्मण और भरत। Y-अक्ष पर प्रतिशत 0 से 100 तक है। प्रत्येक पात्र के लिए दो बार हैं - एक लोकप्रियता दर्शाने वाली और दूसरी अनुप्रयोगशीलता दर्शाने वाली। राम के मर्यादा पालन की लोकप्रियता 85% है जबकि अनुप्रयोगशीलता 72% है, जो 13 प्रतिशत अंक का अंतर दर्शाता है। यह दर्शाता है कि लोग मर्यादा और धर्म के महत्व को तो समझते और स्वीकार करते हैं। लेकिन व्यावहारिक जीवन में इसे लागू करना चुनौतीपूर्ण पाते हैं। आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा और दबाव में कभी-कभी मर्यादा का पालन कठिन हो जाता है। साक्षात्कारों में कई लोगों ने कहा कि वे राम के आदर्श का अनुसरण करना चाहते हैं लेकिन व्यावहारिक बाधाएं आती हैं। सीता के आत्मसम्मान की लोकप्रियता 88% और अनुप्रयोगशीलता 81% है, जो केवल 7 प्रतिशत अंक का अंतर दर्शाता है। यह सबसे कम अंतर है

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

और दोनों में उच्चतम प्रतिशत है। यह दर्शाता है कि नारी सशक्तिकरण के वर्तमान दौर में सीता का आत्मसम्मान और स्वाभिमान का गुण अत्यधिक प्रासंगिक माना जाता है और लोग (विशेष रूप से महिलाएं) इसे अपने जीवन में लागू भी कर रहे हैं। महिलाएं अब अन्याय को स्वीकार नहीं कर रहीं और अपने अधिकारों के लिए खड़ी हो रही हैं, जैसा सीता ने किया था।

हनुमान की सेवाभावना की लोकप्रियता सर्वाधिक 92% है लेकिन अनुप्रयोगशीलता केवल 68% है, जो 24 प्रतिशत अंक का सबसे बड़ा अंतर दर्शाता है। यह एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। लगभग सभी लोग हनुमान की निस्वार्थ सेवा को सबसे महान गुण मानते हैं और इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण समझते हैं। लेकिन आधुनिक स्वार्थपूर्ण और व्यक्तिवादी युग में इसे अपनाना सबसे कठिन है। लोग स्वीकार करते हैं कि वे व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं और निस्वार्थ सेवा करना चुनौतीपूर्ण है। यह अंतर समकालीन समाज की एक बड़ी समस्या को रेखांकित करता है।

लक्ष्मण की कर्तव्यनिष्ठा की लोकप्रियता 83% और अनुप्रयोगशीलता 76% है, जो 7 प्रतिशत अंक का अंतर दर्शाता है। कर्तव्य निर्वहन को महत्वपूर्ण माना जाता है और अधिकांश लोग इसे अपने जीवन में लागू भी करते हैं, विशेष रूप से पेशेवर संदर्भ में।

भरत के त्याग की लोकप्रियता 78% और अनुप्रयोगशीलता 61% है, जो 17 प्रतिशत अंक का दूसरा सबसे बड़ा अंतर दर्शाता है। त्याग को एक महान गुण माना जाता है लेकिन आधुनिक प्रतिस्पर्धी और महत्वाकांक्षी युग में इसे अपनाना बहुत कठिन है। लोग अपने अधिकारों और अवसरों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं, जो समझा जा सकता है।

यह चार्ट एक महत्वपूर्ण संदेश देता है - सभी गुण अत्यधिक लोकप्रिय और सम्मानित हैं लेकिन उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग में भिन्नता है। कुछ गुणों (जैसे आत्मसम्मान) को लागू करना आसान है जबकि अन्य (जैसे सेवा और त्याग) को लागू करना कठिन है। यह अंतर समाज को यह चुनौती देता है कि वह केवल इन मूल्यों की प्रशंसा न करे बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारने का भी प्रयास करे।

5. विवेचना

इस व्यापक शोध के परिणाम कई महत्वपूर्ण और दूरगामी निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं जो भारतीय समाज की वर्तमान मनःस्थिति और भविष्य की दिशा को समझने में सहायक हैं। सबसे उल्लेखनीय और उत्साहवर्धक बात यह है कि तीव्र आधुनिकीकरण, भूमंडलीकरण, तकनीकी क्रांति और पाश्चात्यीकरण के व्यापक प्रभाव के बावजूद रामचरितमानस के पात्रों के आदर्श भारतीय समाज में न केवल प्रासंगिक माने जाते हैं बल्कि अत्यधिक मूल्यवान और आवश्यक समझे जाते हैं। 78% से अधिक उत्तरदाताओं ने इन आदर्शों को समकालीन जीवन के लिए महत्वपूर्ण माना, जो इस व्यापक धारणा को स्पष्ट रूप से खारिज करता है कि आधुनिक पीढ़ी पारंपरिक मूल्यों से पूरी तरह विमुख हो गई है। वास्तव में, परिणाम दर्शाते हैं कि भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ है और परंपरा को अस्वीकार नहीं कर रहा बल्कि उसे आधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित कर रहा है। हनुमान के चरित्र की सर्वाधिक स्वीकार्यता (82% ने अत्यधिक प्रासंगिक माना) यह दर्शाती है कि सेवा और समर्पण के मूल्य आज भी सबसे अधिक प्रेरक और आवश्यक हैं। आधुनिक समाज में जहां व्यक्तिवाद, स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा हावी हो रही है, वहां हनुमान का निस्वार्थ सेवाभाव एक विपरीत लेकिन अत्यंत आकर्षक आदर्श प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से युवा वर्ग में हनुमान की लोकप्रियता उनकी शक्ति, साहस, विद्वता और भक्ति के अद्भुत संयोजन के कारण है। हनुमान एक संपूर्ण व्यक्तित्व के प्रतीक हैं जो शारीरिक शक्ति, बौद्धिक क्षमता और आध्यात्मिक गहराई को एकीकृत करते हैं।

सीता के चरित्र की उच्च प्रासंगिकता (71%) विशेष रूप से नारी सशक्तिकरण आंदोलन के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारंपरागत रूप से सीता को केवल आदर्श पत्नी और पतिव्रता के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है, लेकिन आधुनिक व्याख्या सीता के चरित्र के अन्य महत्वपूर्ण आयामों को उजागर करती है। सीता का स्वाभिमान, अग्नि परीक्षा से इंकार, वनवास में आत्मनिर्भरता और अंततः पृथ्वी में समाने का स्वतंत्र निर्णय - ये सभी तत्व एक सशक्त स्त्री चरित्र को प्रदर्शित करते हैं जो अपने सम्मान से कोई समझौता नहीं करती। महिला उत्तरदाताओं में सीता की प्रासंगिकता 78% थी जो पुरुषों के 65% से काफी अधिक है, यह दर्शाता है कि आधुनिक महिलाएं सीता को एक रोल मॉडल के रूप में देखती हैं।

आयु वर्ग के आधार पर विश्लेषण एक सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाता है। यद्यपि उम्र बढ़ने के साथ इन मूल्यों के प्रति स्वीकार्यता बढ़ती है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि युवाओं में भी 68% स्वीकार्यता है। यह दर्शाता है कि युवा पीढ़ी इन मूल्यों को पूरी तरह अस्वीकार नहीं कर रही। हालांकि, गहन साक्षात्कारों से यह स्पष्ट हुआ कि युवाओं का दृष्टिकोण पुरानी पीढ़ी से भिन्न है। वे इन मूल्यों को अंध विश्वास के साथ नहीं बल्कि तार्किक समझ के साथ स्वीकार करते हैं। वे प्रश्न पूछते हैं, बहस करते हैं और फिर अपने निष्कर्ष तक पहुंचते हैं। यह एक स्वस्थ और परिपक्व दृष्टिकोण है जो परंपरा को जीवित रखते हुए उसे समकालीन बनाता है।

शिक्षा स्तर और प्रासंगिकता के बीच संबंध का विश्लेषण इस अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि उच्च शिक्षा पारंपरिक मूल्यों की शत्रु नहीं है। वास्तव में, शोध और विशेषज्ञता स्तर पर सर्वाधिक 75% लोगों ने इन आदर्शों को अत्यधिक प्रासंगिक माना। यह दर्शाता है कि गहन अध्ययन और बौद्धिक विकास से लोग रामचरितमानस की दार्शनिक गहराई, मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता और सामाजिक प्रासंगिकता को बेहतर समझते हैं। वे इसे अंधविश्वास या धार्मिक रूढ़िवाद से परे जाकर एक गहन जीवन दर्शन के रूप में देखते हैं। यह निष्कर्ष उन आशंकाओं को निरस्त करता है कि आधुनिक शिक्षा भारतीय संस्कृति को नष्ट कर रही है।

सामाजिक समस्याओं के समाधान में इन आदर्शों की भूमिका के संबंध में उत्तरदाताओं की अत्यधिक सकारात्मक धारणा (68% से 87% तक) यह दर्शाती है कि लोग केवल सैद्धांतिक रूप से इन मूल्यों की प्रशंसा नहीं कर रहे बल्कि उन्हें व्यावहारिक समाधान के रूप में देख रहे हैं। विशेष रूप से नैतिक पतन (87%) और परिवार विघटन (82%) जैसी समस्याओं के लिए रामचरितमानस के मूल्यों को प्रभावी समाधान माना जाना यह दर्शाता है कि लोग पारंपरिक ज्ञान में आधुनिक समस्याओं के उत्तर खोज रहे हैं। यह एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है जो संकेत देती है कि भारतीय समाज अंधाधुंध पाश्चात्यीकरण से थककर अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है।

हालांकि, लोकप्रियता और अनुप्रयोगशीलता के बीच का अंतर एक महत्वपूर्ण चुनौती को रेखांकित करता है। विशेष रूप से हनुमान के सेवाभाव (24% अंतर) और भरत के त्याग (17% अंतर) जैसे गुणों को

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लोग बहुत महत्वपूर्ण तो मानते हैं लेकिन व्यावहारिक जीवन में लागू करना कठिन पाते हैं। यह आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धात्मक, स्वार्थपूर्ण और भौतिकवादी प्रकृति को दर्शाता है। लोग स्वीकार करते हैं कि वे व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं और निस्वार्थ सेवा या त्याग करना चुनौतीपूर्ण है। यह अंतर एक चेतावनी है कि केवल मूल्यों की प्रशंसा करना पर्याप्त नहीं है, उन्हें जीवन में उतारने के लिए सचेत प्रयास करने होंगे।

इस अध्ययन की कुछ सीमाएं भी हैं जिन्हें स्वीकार करना आवश्यक है। प्रथम, यह अध्ययन केवल पांच राज्यों तक सीमित था जो मुख्यतः हिंदी भाषी क्षेत्र हैं। दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर और अन्य क्षेत्रों में स्थिति भिन्न हो सकती है। द्वितीय, 500 का नमूना आकार यद्यपि पर्याप्त है लेकिन भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के संदर्भ में इसे और बड़ा किया जा सकता था। तृतीय, यह अध्ययन मुख्यतः मात्रात्मक था और गुणात्मक पक्ष को और अधिक गहराई से खोजा जा सकता था।

6. निष्कर्ष

यह व्यापक और बहुआयामी शोध अध्ययन निश्चित और प्रमाणिक रूप से यह स्थापित करता है कि रामचरितमानस के पात्रों के आदर्श वर्तमान भारतीय समाज में न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि अत्यधिक महत्वपूर्ण, आवश्यक और मार्गदर्शक हैं। राम का धर्मपालन और मर्यादा, सीता का स्वाभिमान और शक्ति, हनुमान की निस्वार्थ सेवाभावना, लक्ष्मण की अटूट कर्तव्यनिष्ठा और भरत का महान त्याग - ये सभी मूल्य आज भी समाज को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दिशा प्रदान कर सकते हैं।

शोध के निष्कर्ष यह भी स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि आधुनिक शिक्षा, तकनीकी विकास और पाश्चात्य प्रभाव के बावजूद भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ है और अपनी पहचान को बनाए रखने का प्रयास कर रहा है। विशेष रूप से नैतिक संकट, परिवार विघटन, भ्रष्टाचार, लैंगिक हिंसा और सामाजिक असमानता जैसी गंभीर समकालीन समस्याओं के समाधान में इन आदर्शों की महत्वपूर्ण और प्रभावकारी भूमिका हो सकती है।

युवा पीढ़ी का इन मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विशेष रूप से उत्साहवर्धक है। यद्यपि वे अंध अनुकरण के बजाय तार्किक समझ के साथ इन मूल्यों को स्वीकार करते हैं, लेकिन यह एक स्वस्थ प्रवृत्ति है जो परंपरा को जीवित रखते हुए उसे समकालीन और प्रासंगिक बनाती है। उच्च शिक्षित वर्ग में इन मूल्यों की सर्वाधिक स्वीकार्यता यह सिद्ध करती है कि शिक्षा और परंपरा परस्पर विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं।

भविष्य के शोध के लिए कई महत्वपूर्ण दिशाएं सुझाई जा सकती हैं। प्रथम, रामचरितमानस के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे आर्थिक दर्शन, राजनीतिक सिद्धांत, पर्यावरण संरक्षण के संदेश और शैक्षणिक मूल्यों का भी गहन अध्ययन किया जाना चाहिए। द्वितीय, विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, धार्मिक समुदायों और सामाजिक-आर्थिक वर्गों में इन मूल्यों की स्वीकार्यता का तुलनात्मक अध्ययन भी महत्वपूर्ण और आवश्यक होगा। तृतीय, लोकप्रियता और अनुप्रयोगशीलता के बीच के अंतर को कम करने के लिए व्यावहारिक रणनीतियां विकसित करने पर शोध किया जाना चाहिए।

व्यावहारिक स्तर पर, शैक्षणिक संस्थानों में रामचरितमानस के मूल्यों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। लेकिन इसे रटने या धार्मिक शिक्षा के रूप में नहीं बल्कि जीवन कौशल और नैतिक विकास के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। सामाजिक संगठनों को इन मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समुदाय-आधारित कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। सरकारी नीतियों में भी इन मूल्यों को शामिल किया जा सकता है, विशेष रूप से सुशासन, सामाजिक न्याय और पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में।

मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करके इन मूल्यों को युवा पीढ़ी तक आकर्षक और समकालीन तरीके से पहुंचाया जा सकता है। फिल्में, वेब सीरीज, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया सामग्री के माध्यम से रामचरितमानस के चरित्रों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जा सकता है। संवादात्मक कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित किए जा सकते हैं जहां लोग इन मूल्यों को अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं, इस पर चर्चा कर सकें।

अंततः यह कहा जा सकता है कि रामचरितमानस केवल एक धार्मिक या साहित्यिक कृति नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक संपूर्ण, समग्र और कालजयी पद्धति है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक, उपयोगी और आवश्यक है जितनी पांच सौ वर्ष पूर्व थी। इसके पात्रों के आदर्श भारतीय समाज को नैतिक पतन से बचाने, सामाजिक सद्भाव स्थापित करने, पारिवारिक मूल्यों को मजबूत करने और व्यक्तिगत चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह अध्ययन आशा करता है कि समाज, शैक्षणिक संस्थान, सरकार और व्यक्ति सभी मिलकर इन कालजयी मूल्यों को जीवित रखने और उन्हें समकालीन संदर्भ में लागू करने का प्रयास करेंगे, जिससे एक बेहतर, नैतिक और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण हो सकेगा।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल प. भक्ति और धर्म: रामचरितमानस का आध्यात्मिक संदेश। आध्यात्मिक अध्ययन। 2017;14(1):56–73।
2. चतुर्वेदी र. रामचरितमानस में पारिवारिक संबंधों का चित्रण: एक समकालीन विश्लेषण। भारतीय साहित्य अध्ययन। 2020;45(2):112–128।
3. चौहान व. आधुनिक जीवन में रामचरितमानस के मूल्यों की प्रासंगिकता। जीवन दर्शन। 2018;31(2):98–115।
4. जोशी स. रामचरितमानस और सामाजिक सद्भाव: एक अध्ययन। भारतीय समाज। 2016;43(4):189–206।
5. तिवारी र. तुलसीदास की नैतिक दृष्टि और समकालीन समाज। नैतिकता अध्ययन। 2019;27(3):123–141।
6. त्रिपाठी स. तुलसीदास की सीता: परंपरा और आधुनिकता का संगम। हिन्दी अनुशीलन। 2016;12(3):67–84।
7. द्विवेदी प. रामचरितमानस में नेतृत्व के गुण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। सांस्कृतिक अध्ययन जर्नल। 2015;28(1):45–62।
8. पटेल म. रामचरितमानस: एक कालजयी महाकाव्य का सामाजिक संदेश। साहित्य विवेचन। 2020;36(1):45–63।
9. पांडे व. समकालीन भारत में रामचरितमानस की प्रासंगिकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। धर्म और समाज। 2019;34(4):156–173।

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

10. पाठक म. लक्ष्मण चरित्र: कर्तव्य और समर्पण का प्रतीक। साहित्यिक विमर्श। 2014;18(2):89–105।
11. गुप्ता र. युवा पीढ़ी और रामचरितमानस के मूल्य: एक अनुभवजन्य अध्ययन। सामाजिक परिवर्तन। 2020;51(3):234–251।
12. मिश्रा क. रामचरितमानस: एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में। भारतीय संस्कृति अनुसंधान। 2017;22(1):78–96।
13. वर्मा स. रामराज्य: एक आदर्श शासन व्यवस्था का दर्शन। राजनीतिक दर्शन। 2021;16(4):201–218।
14. शर्मा द. तुलसीदास का सामाजिक दर्शन और वर्तमान प्रासंगिकता। हिन्दी साहित्य समीक्षा। 2018;39(2):134–152।
15. सिंह र. रामचरितमानस में नारी शक्ति का चित्रण: एक नारीवादी विश्लेषण। महिला अध्ययन। 2019;25(3):167–185।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

श्रीमती राधेरानी भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान की शोधार्थी हैं। वे अपने शोध कार्य में सक्रिय रूप से संलग्न हैं और अकादमिक उत्कृष्टता की ओर निरंतर प्रयासरत हैं। उनकी रुचि अपने विषय के गहन अध्ययन, अनुसंधान गतिविधियों और ज्ञान के विस्तार में है, तथा वे भविष्य में शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान देना चाहती हैं।

© 2026 श्रीमती राधेरानी, डॉ शिवानी शर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/